Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 23/December/2023 IJRAW: 2024; 3(1):170-176 Accepted: 26/January/2024

संचार में फोटोग्राफी: एक महत्वपूर्ण उपकरण

*[1]वीरेन्द्र कुमार और [2]प्रो. (डॉ.) शशि कांत

*[1]शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला, भारत।

[2]प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला, भारत।

सारांश

फोटोग्रफी सही मायने में संचार के लिए सबसे महत्वपूर्ण और शक्तिशाली उपकरण बनता जा रहा है। फोटोग्राफ वास्तविकता को प्रतिनिधित्व करता है। फोटोग्राफ देखने मात्र से ही ख़बर का पूरा सार दिमाग में बन जाता है। 1839 में डगुएरियोटाइप के आगमन के बाद से संचार के लिए फोटोग्रफ एक अहम हिस्सा बन गया है। आज के समय में फोटोग्राफ लेना अब मुख्य रूप से किसी परिवार की चित्रात्मक विरासत को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से किया जाने वाला स्मृति कार्य नहीं रह गया है, बल्कि यह तेजी से किसी व्यक्ति की पहचान निर्माण और संचार का एक उपकरण बनता जा रहा है। वर्तमान में फोटोग्रफ के उपयोग का बढ़ावा देने के लिए डिजीटल कैमरा, मोबाइल कैमरा और फोटो–ब्लॉग जैसे उपकरणों का उपयोग किया जा रहा है। संचार के लिए फोटोग्रफ महत्वपूर्ण कारक है अर्थात हम यह कह सकते हैं कि फोटोग्राफी दृश्य संचार का एक उपकरण है। यह मौखिक या गैर–मौखिक संचार हो सकता है। एक फोटोग्राफर के दो पहलू होते हैं, एक तकनीकी और दूसरा कलात्मक। यदि फोटोग्राफर किसी दृश्य में विषय को इस प्रकार व्यवस्थित करता है कि उसका अर्थ समझ में आए, तो यह फोटोग्राफी का एक पक्ष है। दूसरी ओर, यदि आप कलात्मक ढंग से सोचते हैं तो आप भावनाओं को भड़काने के लिए विषयों को एक दृश्य में व्यवस्थित करते हैं। एक महान फोटोग्राफर के बीच कुछ समानताएँ होती हैं जैसे रचनात्मक नजर, अपने विषय या ग्राहकों से संवाद करने की क्षमता। जब फोटोग्राफर छवि खींचता है, तो यह महत्वपूर्ण है कि उसकी छवि प्रभावी ढंग से संचार करे क्योंकि इसका आपकी तस्वीरों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। इस लेख का उद्देश्य यह पता लगाना है कि समय के साथ–साथ फोटोग्राफी कैसे विकसित हुई और संचार के लिए महत्वपूर्ण बनती चली गई साथ ही यह शोध आलेख फोटोग्राफी के महत्व और लोगों के दुनिया को देखने के तरीके को बदलने की इसकी क्षमता पर प्रकाश डालता है। इस शोध आलेख का उद्देश्य प्रशासकों, समर्थकों, स्थानीय समुदायों और छात्रों के बीच फोटोग्राफी को बढ़ावा देना है।

मुख्य शब्दः फोटोग्राफी, न्यूज फोटोग्रफी, मीडिया, वन्यजीव फोटोग्राफी, फैशन फोटोग्राफी।

प्रस्तावना

(खानफर, 2013, पृष्ठ 31) [9] "फोटोग्राफी मेरी भाषा है, मैं सिर्फ अपनी आंखों से बात करता हूं. कैमरा मेरी भावुक कलम है, प्रकाश मेरी अनंत स्याही है, और फिल्म मेरा कागज है" फोटोग्राफी संचार का एक सार्वभौमिक उपकरण है। इस अध्ययन का उद्देश्य फोटोग्राफी की संचार शक्तियों की जांच करना और एक व्यवहार्य कलात्मक माध्यम के रूप में फोटोग्राफी की वकालत करने की आवश्यकता पर चर्चा करना है। इस पूरे शोध के दौरान मैंने यह पता लगाया कि किस प्रकार फोटोग्राफी कलात्मक रूप से उन चीजों को सशक्त रूप से संप्रेषित करती है जिन्हें शब्द व्यक्त नहीं कर सकते। इस फोटोग्राफिक अध्ययन को उन कलाकारों से प्रेरणा मिलती है जिन्होंने सामाजिक न्याय के मूल सिद्धांतों का संचार किया है। हालाँकि दुनिया भर में कई लोग इस उपकरण का उपयोग करते हैं, लेकिन एक वैध कला के रूप में फोटोग्राफी के महत्व को बढ़ावा देने के लिए और अधिक समर्थक होने चाहिए। (ट्रेचटेनबर्ग, 1980, पृष्ठ

*Corresponding Author: वीरेन्द्र कुमार

291) [13] जैसा कि बर्जर (1974) ने तर्क दिया, "निश्चित रूप से अधिकांश लोग फोटोग्राफी को एक कला नहीं मानते हैं, भले ही वे इसका अभ्यास, आनंद, उपयोग और महत्व रखते हों" । जबकि फोटोग्राफी को व्यापक रूप से संचार करने के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग किया जाता है, सामान्य रूप से कलाकारों और शिक्षकों के लिए सीमित वकालत संसाधन उपलब्ध हैं और विशेष रूप से सामाजिक परिवर्तन के लिए फोटोग्राफी का उपयोग करने के लिए तैयार हैं।

फोटोग्राफी एक ऐसा उपकरण है जो लोगों को दूसरों को यह बताने में मदद करता है कि उन्हें दैनिक जीवन में क्या सुंदर और महत्वपूर्ण लगता है। यह किसी व्यक्ति को समय के छोटे–छोटे क्षणों को संप्रेषित करने की क्षमता देता है जब विशेष भावनाएं या मनोदशाएं महसूस की जाती हैं। कलाकार खुशी, दुःख, विनम्रता या आश्चर्य जैसी अभिव्यक्तियाँ संप्रेषित कर सकता है।

यह अध्ययन फोटोग्राफी पर केंद्रित है, वर्तमान में संचार ने दुनिया को बदलने के लिए फोटाग्राफी का उपयोग किया है, इस अध्ययन का उद्देश्य फोटोग्राफी की उन विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करना है, जो इसे संचार का इतना महत्वपूर्ण माध्यम बनाती हैं।

फोटोग्राफी शिक्षा के महत्व पर जोर देना

बहुत से लोगों में इस बात की समझ का अभाव है कि विचारों को दृश्य रूप से संप्रेषित करने के लिए फोटोग्राफी के उपकरणों का उचित उपयोग कैसे किया जाए। किसी कलाकार की नजर से फोटोग्राफी को देखना स्नैपशॉट लेने से भिन्न होता है। कोई भी स्नैपशॉट कैप्चर कर सकता है. जिस क्षण यह उपकरण कलाकार की नजर में आता है, व्यक्ति दुनिया को कुछ अलग ढंग से देखना और अनुभव करना शुरू कर देता है, लेकिन कई लोग इस महत्व को नहीं समझते हैं। मेरा लक्ष्य विशिष्ट रूप से देखने और समझने के महत्व पर जोर देना है, जिसके परिणामस्वरूप प्रभावी संचार हो सकता है। पेशेवर फोटोग्राफर अक्सर कहते हैं कि मुख्य चीज जिसे वे कैप्चर करना चाहते हैं वह मूड है, और बाकी सब कुछ विवरण है।

खानफर (2013) [9], ने बताया कि फोटोग्राफी के माध्यम से "हम उन सवालों के जवाब ढूंढना जारी रखते हैं जिन्हें हम आमतौर पर अनदेखा कर देते हैं, प्रकृति की लय और मनुष्य के अनुष्ठानों को सीखते हैं" (पृ.31)। मूल्यों और अनुभवों के साथ–साथ प्रौद्योगिकी और मानवीय विमर्श का मिश्रण भी होना चाहिए। हालाँकि, यह मिश्रण तब तक हासिल नहीं किया जा सकता जब तक कलाकार तकनीक और रचना को नहीं समझताय इसलिए, इसे स्कूल और कला स्टूडियो में पढ़ाया जाना चाहिए। आमतौर पर स्नैपशॉट किसी अनुभव या दृश्य का दस्तावेजीकरण करने के लिए प्रकाश का एक अनियोजित रफ कैप्चर होता है। दूसरी ओर, कलात्मक योग्यता के साथ शूट की गई तस्वीर में एक अच्छी तरह से रचित, योजनाबद्ध और तकनीकी रूप से उजागर रूप शामिल होता है। सकारात्मक खबर यह है कि आज का समाज छवियों को कैद करने के लिए लाभकारी उपकरणों से भरा हुआ है। फिर भी, बहुत से लोगों को गतिशील रचनाएँ बनाने के लिए आवश्यक ज्ञान या उनके विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने वाले उपकरणों में हेरफेर करने के लिए आवश्यक परिचितता का अधिकार नहीं है। मैंने माध्यम के प्रभाव पर ध्यान केंद्रित किया क्योंकि इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। इस माध्यम में सभी उम्र, नस्ल, लिंग और जातीयता के लोग भाग ले सकते हैं। फोटोग्राफरों ने अपनी छवियों का उपयोग समाज में अन्याय को उजागर करने, युद्धों की निंदा करने और मानव जाति की गरिमा को उजागर करने के लिए किया है। मैं सामाजिक परिवर्तन के मुद्दे पर ध्यान दे रहा हूं, क्योंकि मेरा मानना है कि छवियां बताती हैं कि समाज में क्या हो रहा है। फोटोग्राफी की अनूठी विशेषताओं, जिन्हें इस शोध में बाद में विस्तार से बताया जाएगा, ने स्वयं को समाज का प्रमुख दृश्य उपकरण बनने के लिए तैयार किया। मेरा मानना है कि कैमरे का उद्देश्य कलाकारों को दुनिया को एक अलग दृष्टिकोण से देखने में सक्षम बनाना है। तदनुसार, सामाजिक न्याय में चीजों को अलग–अलग दृष्टिकोण से देखना सीखने का कार्य शामिल है।

फोटोग्रफी की विकास यात्रा

वर्ष 1800 के आसपास, ब्रिटिश आविष्कारक थॉमस वेजवुड ने प्रकाश–संवेदनशील पदार्थ के माध्यम से छवि को कैमरा ऑब्स्कुरा में कैद करने का पहला ज्ञात प्रयास किया था। उन्होंने सिल्वर नाइट्रेट से उपचारित कागज या सफेद चमड़े का उपयोग किया। यद्यपि वह सीधे सूर्य के प्रकाश में सतह पर रखी वस्तुओं की छाया को पकड़ने में सफल रहे, लेकिन 1802 में यह बताया गया कि ष्कैमरे के अस्पष्ट माध्यम से बनाई गई छवियां किसी भी मध्यम समय में, प्रभाव पैदा करने के लिए बहुत धुंधली पाई गई हैं। "चाँदी का नाइट्रेट।" छाया चित्र अंततः सभी ओर अंधकारमय हो गए। पहली स्थायी फोटो–नक्काशी 1822 में फ्रांसीसी आविष्कारक निसेफोर नीपसे द्वारा बनाई गई एक छवि थी, लेकिन बाद में इससे प्रिंट बनाने के प्रयास में इसे नष्ट कर दिया गया था। 1825 में नीपेस फिर से सफल हुआ। 1826 में, उसने ले ग्रास में खिड़की से दृश्य बनाया, जो प्रकृति की सबसे पुरानी जीवित तस्वीर थी। क्योंकि निएप्स के कैमरे की तस्वीरों के लिए बहुत लंबे एक्सपोजर (कम से कम आठ घंटे और शायद कई दिन) की आवश्यकता होती है, उन्होंने अपनी बिटुमेन प्रक्रिया में काफी सुधार करने या इसे एक ऐसी प्रक्रिया से बदलने की मांग की जो अधिक व्यावहारिक हो। लुई डागुएरे के साथ साझेदारी में, उन्होंने पोस्ट–एक्सपोजर प्रसंस्करण विधियों पर काम किया, जिससे दृश्यमान रूप से बेहतर परिणाम मिले और बिटुमेन को अधिक प्रकाश–संवेदनशील राल से बदल दिया गया, लेकिन कैमरे में घंटों एक्सपोजर की अभी भी आवश्यकता थी। अंततः व्यावसायिक शोषण को ध्यान में रखते हुए, साझेदारों ने

पूर्ण गोपनीयता का विकल्प चुना। 1833 में निएप्स की मृत्यु हो गई और फिर डागुएरे ने प्रयोगों को प्रकाश–संवेदनशील सिल्वर हैलाइड्स की ओर पुनर्निर्देशित किया। डागुएरे के प्रयासों की परिणति इस प्रकार हुई जिसे बाद में डागुएरियोटाइप प्रक्रिया का नाम दिया गया (वालेस, 2019) [15]।

इस बीच, एक अन्य ब्रिटिश आविष्कारक, विलियम फॉक्स टैलबोट, 1834 की शुरुआत में ही कागज पर कच्ची लेकिन यथोचित हल्की–तेज चांदी की छवियां बनाने में सफल हो गए थे, लेकिन उन्होंने अपने काम को गुप्त रखा था। जनवरी 1839 में डागुएरे के आविष्कार के बारे में पढ़ने के बाद, टैलबोट ने अपनी अब तक की गुप्त पद्धति को प्रकाशित किया और इसमें सुधार करना शुरू कर दिया। टैलबोट की पेपर–आधारित फोटोग्राफी के लिए आमतौर पर कैमरे में घंटों लंबे एक्सपोजर की आवश्यकता होती है, लेकिन 1840 में उन्होंने कैलोटाइप प्रक्रिया बनाई, जिसमें एक्सपोजर को काफी कम करने के लिए एक गुप्त छवि के रासायनिक विकास का उपयोग किया गया। अपने मूल और कैलोटाइप दोनों रूपों में, डैगुएरे के विपरीत, टैलबोट की प्रक्रिया ने एक पारभासी नकारात्मक बनाया जिसका उपयोग कई सकारात्मक प्रतियों को मुद्रित करने के लिए किया जा सकता थाय यह आज तक की अधिकांश आधुनिक रासायनिक फोटोग्राफी का आधार है। ब्रिटिश रसायनशास्त्री जॉन हर्शल ने इस नये क्षेत्र में कई योगदान दिये। उन्होंने साइनोटाइप प्रक्रिया का आविष्कार किया, जिसे बाद में ब्लूप्रिंट के नाम से जाना गया। वह फोटोग्राफी, नकारात्मक और सकारात्मक शब्दों का उपयोग करने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने 1839 के अंत में पहला ग्लास नेगेटिव बनाया। 1850 के दशक के अंत से लेकर 1890 के दशक के दौरान लचीली प्लास्टिक फिल्मों के सामान्य परिचय तक ग्लास प्लेटें अधिकांश मूल कैमरा फोटोग्राफी का माध्यम थीं। हालाँकि फिल्म की सुविधा ने शौकिया फोटोग्राफी को बहुत लोकप्रिय बना दिया, प्रारंभिक फिल्में अपने ग्लास प्लेट समकक्षों की तुलना में कुछ अधिक महंगी और स्पष्ट रूप से कम ऑप्टिकल गुणवत्ता वाली थीं, और 1910 के दशक के अंत तक वे अधिकांश पेशेवर फोटोग्राफरों द्वारा पसंद किए जाने वाले बड़े प्रारूपों में उपलब्ध नहीं थीं।

हर्टर और ड्रिफिल्ड ने 1876 में फोटोग्राफिक इमल्शन की प्रकाश संवेदनशीलता पर अग्रणी काम शुरू किया। पहली लचीली फोटोग्राफिक रोल फिल्म का विपणन 1885 में जॉर्ज ईस्टमैन द्वारा किया गया था, लेकिन यह मूल फिल्म वास्तव में एक पेपर बेस पर एक कोटिंग थी। प्रसंस्करण के भाग के रूप में, छवि–असर परत को कागज से हटा दिया गया और एक कठोर जिलेटिन समर्थन में स्थानांतरित कर दिया गया। पहली पारदर्शी प्लास्टिक रोल फिल्म 1889 में आई। यह अत्यधिक ज्वलनशील नाइट्रोसेल्यूलोज (सेल्युलाइड) से बनाई गई थी, जिसे अब आमतौर पर नाइट्रेट फिल्म कहा जाता है। सेलूलोज एसीटेट या सुरक्षा फिल्म को बाद में 1908 में कोडक द्वारा पेश किया गया था। मूल रूप से, सभी फोटोग्राफी मोनोक्रोम, या काले और सफेद थे। रंगीन फिल्म आसानी से उपलब्ध होने के बाद भी, कम लागत और अपने क्लासिक फोटोग्राफिक लुक के कारण, दशकों तक श्वेत–श्याम फोटोग्राफी का बोलबाला रहा। रंगीन फोटोग्राफी की खोज 1840 के दशक की शुरुआत में की गई थी। रंग में शुरुआती प्रयोगों के लिए बहुत लंबे एक्सपोजर (कैमरे की छवियों के लिए घंटे या दिन) की आवश्यकता होती थी और सफेद रोशनी के संपर्क में आने पर रंग को जल्दी से फीका पड़ने से रोकने के लिए तस्वीर को ठीक नहीं किया जा सकता था।

पहली स्थायी रंगीन तस्वीर 1861 में स्कॉटिश भौतिक विज्ञानी जेम्स क्लर्क मैक्सवेल द्वारा 1855 में प्रकाशित तीन–रंग–पृथक्करण सिद्धांत का उपयोग करके ली गई थी। वस्तुतः सभी व्यावहारिक रंग प्रक्रियाओं की नींव, मैक्सवेल का विचार तीन अलग–अलग काले और सफेद तस्वीरें लेने का था। लाल, हरे और नीले फिल्टर के माध्यम से। कोडाक्रोम, पहली आधुनिक इंटीग्रल ट्रिपैक (या मोनोपैक) रंगीन फिल्म, कोडक द्वारा 1935 में पेश की गई थी।

1981 में, सोनी ने इमेजिंग के लिए चार्ज–युग्मित डिवाइस का उपयोग करने वाले पहले उपभोक्ता कैमरे का अनावरण किया, जिससे फिल्म की आवश्यकता समाप्त हो गईरू सोनी माविका। जबकि माविका ने छवियों को डिस्क पर सहेजा था, छवियों को टेलीविजन पर प्रदर्शित किया गया था, और कैमरा पूरी तरह से डिजिटल नहीं था। 1991 में, कोडक ने क्वै 100 का अनावरण किया, जो पहला व्यावसायिक रूप से उपलब्ध डिजिटल सिंगल लेंस रिफ्लेक्स कैमरा था।

हालाँकि इसकी उच्च लागत के कारण फोटोजर्नलिज्म और पेशेवर फोटोग्राफी के अलावा अन्य उपयोगों को छोड़ दिया गया, लेकिन व्यावसायिक डिजिटल फोटोग्राफी का जन्म हुआ।

फोटोग्रफी संचार के रूप में

अगर आप कल्पना करें कि आपका दैनिक अखबार या पत्र–पत्रिकाऐं बिना फोटोग्राफ के प्रसारित हो रहा है, तो आप उसको कितना महत्व देंगे। फोटोग्राफ इस हद तक प्रभाव पैदा करने के लिए जानी जाती हैं कि वे दर्शकों को प्रभावित कर सकती हैं। फोटोजर्नलिज्म फोटोग्राफी की एक शाखा है जो किसी कहानी को संप्रेषित करने के लिए दृश्यों की शक्ति का उपयोग करती है। इसमें ऐसे कारक हैं जो इसे फोटोग्राफी के अन्य रूपों से अलग करते हैं। इस फॉर्म को आमतौर पर विविध दर्शकों तक जानकारी संप्रेषित/प्रसारित करने या कहानियाँ सुनाने का एक प्रभावी तरीका माना जाता है। सादे टेक्स्ट या लेखों की तुलना में तस्वीरें देखने में आकर्षक और सम्मोहक मानी जाती हैं। एक फोटो जर्नलिस्ट का काम फोटोग्राफ के साथ–साथ कहानी बताना भी होता है क्योंकि बिना कहानी बताये फोटोग्रफ प्रभाव नही छोड़ पाती। जनसंचार उपकरण के रूप में फोटोजर्नलिज्म की

शक्ति का पता द्वितीय विश्व युद्ध से लगा, जब ली गई फोटोग्राफ से दुनिया भर के पाठकों को यह एहसास होता था कि दुनिया भर में क्या हो रहा है। आज का प्रकाशन फोटोग्राफ का उपयोग केवल एक कहानी बताने के लिए नहीं, बल्कि जनता के साथ संबंध बनाने के लिए करता है। फोटो जर्नलिज्म भी आज केवल फोटो जर्नलिस्ट तक ही सीमित नहीं रह गया है। किफायती और उन्नत कैमरा उपकरण और इंटरनेट के विकास के साथ, फोटो पत्रकारिता ने विभिन्न सोशल नेटवर्किंग साइटों, त्वरित संदेश अनुप्रयोगों और ब्लॉगों पर तस्वीरों की बाढ़ के साथ जनता के बीच अपना मार्ग प्रशस्त किया है।

फ़ोटोग्राफ़ी ने हमेशा संचार के साधन और अनुभव साझा करने के साधन के रूप में भी काम किया है। जैसा कि सुसान सोंटेग ने 1973 में तर्क दिया था, विदेशी स्थानों के स्नैपशॉट लेने के लिए पर्यटकों की उत्सुकता से पता चलता है कि किसी घटना का अनुभव करने के लिए फोटोग्राफ लेना कैसे सर्वोपरि हो सकता है; साथ ही, फोटोग्राफ की मदद से अनुभवों को संप्रेषित करना पर्यटक फोटोग्राफी का एक अभिन्न अंग है। याद दिलाने और याद दिलाने के एक पारिवारिक उपकरण के रूप में फोटोग्राफी के प्रभुत्व के बावजूद, घरेलू तकनीक के रूप में लोकप्रिय होने के क्षण से ही अन्य कार्य फोटोग्राफी में अंतर्निहित हो गए (Dijck, 2008) [4]।

मानवविज्ञानी बारबरा हैरिसन (2002, पेज–107) ने अपने नृवंशविज्ञान अध्ययन में पाया कि लोग व्यक्तिगत तस्वीरों को स्मृति और कथन से कैसे जोड़ते हैं, यह मानते हैं कि पारिवारिक पुनरू प्रस्तुति के बजाय आत्म–प्रस्तुति अब तस्वीरों का एक प्रमुख कार्य है। हैरिसन का क्षेत्र अध्ययन स्मृति और स्मरणोत्सव से जुड़ी व्यक्तिगत फोटोग्राफी से पहचान निर्माण के एक रूप के रूप में फोटोग्राफीं की ओर एक महत्वपूर्ण बदलाव को स्वीकार करता है। फोटोग्राफी की संचारी भूमिकाओं पर ग्लीसन (2008) [7] ने अपने समकालीन लेख में फोटोग्राफी को सैद्धांतिक रूप देने से जुड़ी कुछ समस्याओं का वर्णन किया गया है और साथ ही यह भ बताया की संचार के अन्य रूपों की तरह, फोटोग्राफी लोगों के बीच एक बातचीत का साधन है, चाहे लोग दूर हों या फिर आमने–सामने हों (पृ.2)। (Ballenger, 2014) [3]

संचार के लिए प्रमुख फोटोग्राफी के प्रकार

फोटो–पत्रकारिताः– संचार का फोटोग्राफी बहुत ही सशक्त माध्यम माना जाने लगा है क्योंकि इसमे किसी भाषा की आवश्यकता नही होती है और इसका प्रभाव सबसे ज्यादा होता है। इसलिए ही विभिन्न माध्यमों में दृश्य को सबसे प्रभावी माना गया है। पत्रकारिता के क्षेत्र में फोटो–पत्रकारिता की उपयोगिता दिन ब दिन बढ़ती जा रही है और यह आगे भी बढ़ती रहेगी। प्राकृतिक आपदा, हत्या, युद्व, ग्लैमर या फिर किसी घटनास्थल के फोटोग्रफ को कैमरे में कैद कर करोड़ो लोगों तक फोटोपत्रकार पहुंचाते हैं। इसके जरीये कहानी कही जाती है, फोटोपत्रकार ही इसका नायक होता है जो अपनी सूक्षबूझ और तकनीकि ज्ञान से एक कहानी प्रस्तुत करने वाली फोटोग्रफ खिंच पाता है। ऑनलाईन पोर्टल हो या अखबार दोनो के लिए फोटोग्राफ महत्वपर्ण है। फोटोपत्रकारिता में एक फोटोग्राफ एक हजार से अधिक शब्दों को कहने की सामर्थ्य होती है। आधुनिक युग में फोटोग्राफ या फोटो विहीन समाचार–पत्र व पत्रिकाओं की परिकल्पना नहीं की जा सकती। वास्तव में फोटो के माध्यम से पत्र–पत्रिकाओं प्राण फूंकने की चेष्टा की जाती है। पत्रिकाओं के आवरण पृष्ठ साज–सज्जायुक्त फोटो से लैस होते हैं। फोटो पत्रकारिता में दक्षता आधुनिक युग की मांग है। पाठक उस समाचार पर अधिक विश्वास करते हैं जो फोटोग्राफ से युक्त है। फोटो समाचार अधिक जीवन्त प्रतीत होते हैं। विभिन्न आंदोलनों के समय पुलिस की दमनकारी नीतियों का पर्दाफाश फोटो पत्रकारिता ही तो करती है। इतना ही नहीं, मानवाधिकारों के हनन की क्रियाओं को फोटो के माध्यम से दिखाया जाता है। उपरोक्त फोटोग्राफ 17 अगस्त 2016 को है जो मेरे द्वारा खींचा गया है। बारिश की वजह से लगे जाम को फोटोग्राफ के माध्यम से दर्शाया गया है।

Fig 1: फोटो साभार-वीरेन्द्र कुमार

युद्व फोटोग्राफी

फोटोग्राफी के अविष्कार ने जन जागरूकता बढ़ाने के लिए युद्व की घटनाओं को पकड़ने के लिए पहली बार फोटोग्राफी के रूप में खोजी गई। युद्व फोटोग्राफी में फोटोग्राफर खुद को नुकसान के रास्तें को अपना लेते है क्योंकि कभी–कभी युद्व की फोटोग्राफ निकालने के प्रयास में युद्व के मैदान में जान गंवा देते है। फोटोग्राफी के क्षेत्र में युद्व फोटोग्राफी सबसे कठिन मुश्किल और जोखिम से भरा कार्य है। युद्व फोटोग्राफर युद्ध के भयानक मंजरों की तस्वीरें लेता हैं और दुनिया को दिखाता है कि कैसे हिंसा बड़ी संख्या में लोगों को प्रभावित करती है। मार्च 1854 में, गिल्बर्ट इलियट को बाल्टिक सागर के तट पर रूसी किलेबंदी के दृश्यों की तस्वीरें लेने के लिए कमीशन दिया गया था। रोजर फेंटन पहले आधिकारिक युद्ध फोटोग्राफर थे और जनता तक युद्व क्षेत्र की स्थिति को व्यवस्थित कवरेज का प्रयास करने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने

क्रीमियन युद्ध (1853–1856) की छवियों को अपने कमरे में कैप्चर किया। वर्ष 1850 के दशक में फोटोग्राफी के आविष्कार के साथ ही जन जागरूकता बढ़ाने और युद्ध की घटनाओं को संचित करने की संभावना पहली बार खोजी गई थी। अपने फोटोग्राफिक उपकरणों के आकार और बोझिल प्रकृति के कारण, फेंटन अपनी पसंद के रूपांकनों तक ही सीमित थे, क्योंकि उनके समय की फोटोग्राफिक सामग्री को लंबे समय तक एक्सपोजर की आवश्यकता हुआ करती थी और इसलिए वह केवल स्थिर वस्तुओं के चित्र बनाने में ही सक्षम थे। एक तस्वीर खींचने के लिए, विषय (व्यक्ति) को कुछ मिनटों के लिए पूरी तरह से स्थिर होना पड़ता था। इसलिए उन्होंने युद्ध के अधिक गतिहीन पहलुओं जैसे किलेबंदी, सैनिक, और लड़ाई से पहले और बाद के दृश्यों को रिकॉर्ड किया।

Figure 2: रोजर फेंटन पहले युद्ध फोटोग्राफरों में से एक थे। उन्होंने क्रीमियन युद्ध (1853-1856) की छवियों को कैप्चर किया (फोटो साभार:- गूगल इमेज

फैशन फोटोग्राफी

फैशन फोटोग्राफी सबसे महत्वपूर्ण प्रकारों में से एक ब्रांड कैटलॉग की फैशन डिजाइन, स्टाइलिंग और ब्रांडिंग के क्षेत्र में बड़ी भूमिका है। फैशन फोटोग्राफी, फोटोग्राफी की एक शैली है जो कपड़ों और अन्य फैशन वस्तुओं को प्रदर्शित करने के लिए समर्पित है। फैशन फोटोग्राफी अक्सर विज्ञापनों या फैशन पत्रिकाओं जैसे वोग इंडिया, वूमेंस इरा, एफ. एच. एम, फेमिना, ग्रहशोभा, हार्पर बाजार पत्रिका या एले के लिए आयोजित की जाती है। फैशन फोटोग्राफी ने अपना स्वयं का सौंदर्य विकसित किया है जिसमें कपड़े और फैशन को विदेशी स्थानों या सहायक उपकरणों की उपस्थिति से बढ़ाया जाता है। फैशन फोटोग्राफी के अग्रदूत अठारहवीं शताब्दी में मिलते हैं, जब फैशनेबल कपड़ों की तस्वीरें पत्रिकाओं में छपती थीं और अक्सर हाथ से रंगी जाती थीं। पेरिस उस समय ऐसी पत्रिकाओं के उत्पादन का केंद्र था, जिनमें से कई इंग्लैंड में आयात की जाती थीं।

पहले फैशन फोटोग्राफर संभवतः बैरन एडोल्फ डी मेयर थे जिन्हें 1913 में कोंडे नास्ट ने वोग के लिए प्रयोगात्मक तस्वीरें लेने के लिए काम पर रखा था। उनकी मुख्य विशेषता बैकलाइटिंग और सॉफ्ट–फोकस लेंस का अद्भुत उपयोग था। आरंभिक फैशन चित्र मूलतः अभिजात वर्ग, अभिनेत्रियों और समाज मॉडलों की अपने स्वयं के कपड़े पहने हुए समाज की फोटोग्राफ थीं। (Dr. Doha El-Demedash, 2017) [5], यह फैशन प्रसार, ट्रेंड विश्लेषण और स्टाइलिंग और ब्रांड पहचान प्रदर्शित करने में मदद करता है। लेकिन फैशन कैटलॉग मिशन का श्रेय फोटोग्राफर या डिजाइनर को देने में समस्या बढ़ गई। फैशन फोटोग्राफी कपड़ों, जूते, बैग और गहनों आदि जैसी अन्य फैशन वस्तुओं को प्रदर्शित करने के लिए फोटोग्राफी की एक बेहतरीन शैली है। पारंपरिक फैशन फोटोग्राफी हमेशा कपड़ों को सुंदर और आकर्षक दिखाने के बारे में है। फैशन फोटोग्राफी एक ऐसी फोटो बनाती है जिसमें एक कहानी होती है और उपभोक्ता के लिए संदेश होता है, यह संदेश छवि के घटकों, मूड, मॉडल पोज और सहायक उपकरण से आता है, और इन चीजों में प्रत्येक परिवर्तन अर्थ और संदेश में अंतर लाता है।

Figure 3: फोटो साभार:- दीपक गुप्ता (हिंदुस्तान टाइम्स लखनऊ)

विज्ञापन फोटोग्रफी

हम रूपों और बातों की दुनिया में रहते हैं। कोई देखता कुछ है और कहता कुछ हैय कोई अन्य व्यक्ति कुछ सुनता है और जो कहा जाता है उसकी एक छवि बनाता है। परिणामस्वरूप शब्दों का एक पूल और चित्रों की एक गैलरी बढ़ती है और तेज धारा के साथ एक धारा बन जाती है। पत्रिकाओं की संपादकीय सामग्री में फोटोग्राफी का नया दृष्टिकोण विज्ञापनों में फोटोग्राफी के बढ़ते परिष्कृत उपयोग से मेल खाता है। स्टीचेन, वोग और वैनिटी फेयर पत्रिकाओं के लिए भी काम करते हुए, जे. वाल्टर थॉम्पसन विज्ञापन एजेंसी के लिए अपने काम के माध्यम से 1930 के दशक के सबसे अधिक भुगतान पाने वाले फोटोग्राफरों में से एक बन गए। एंटोन एहल, निकोलस मुरे और अन्य लोगों के साथ मिलकर, उन्होंने विज्ञापन फोटोग्राफी के स्वरूप को किसी उत्पाद की सीधी कैटलॉग तस्वीरों से अधिक प्राकृतिक और कामुक

चित्रणों में बदलने में मदद की, जिसमें अक्सर उत्पाद की उपयोगिता और व्या वहारिकता को इंगित करने के लिए एक महिला के हाथों को शामिल किया जाता था। कुछ विज्ञापन फोटोग्राफरों ने कैमरे के लिए निर्मित विस्तृत मंच सेटों पर भरोसा करना शुरू कर दिया। फोटोग्राफी की कलात्मकता 1930 के दशक की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी के दौरान भी उपभोक्ता की इच्छा को निर्मित करने में सफल रही। अभिषेक (2012, पृष्ठ 113) स्वीकार करते हैं कि चित्रों के प्रभाव की सामान्य उपयोगिता पर, वैश्विक पोजिशनिंग रणनीतियों में बदलाव आया है और वैश्विक ब्रांडों का निर्माण हुआ है जो अपने विज्ञापन में प्रतिलिपि के बजाय लगभग विशेष रूप से दृश्य छवियों पर निर्भर हैं। (Onobe, 2023) [10] शब्द मनमानी रचनाएँ हैं, जबकि फोटोग्राफ के भोलेपन से बाहरी वातावरण का प्राकृतिक प्रतिनिधित्व माना जाता है। व्यक्ति को हमेशा फोटोग्राफ का अर्थ सीखने की जरूरत नहीं पड़ती क्योंकि फोटोग्राफ की भाषा पहले से ही कुछ हद तक सार्वभौमिक हो चुकी है। फोटोग्राफ पर भरोसा करते हुए, विज्ञापनदाता संदेशों के अर्थ का मानकीकरण करता है। विज्ञापनों में फोटोग्राफ संभावित उपभोक्ता को विज्ञापित संदेश के अर्थ का अनुमान लगाने के लिए अक्सर जटिल चित्रात्मक रूपकों के अर्थ पर सोचने पर मजबूर करती हैं। विचार यह है कि उपभोक्ता को संलग्न किया जाए और इच्छित अर्थ चित्र के परिवेश से बढ़कर उद्देश्य–उत्पाद संरक्षण के अनुरूप हो सकता है।

Figure 4: फोटो साभार:- गूगल इमेज

वाईल्ड लाइफ फोटोग्राफी

जब एक फोटोग्राफर कुदरत मे मौजूद वन्य जीवन के दृ श्यों को कैमरा के माध्यम से शूट करता है तब इस चतवमिपवद को वाइल्डलाइफ फोटोग्राफी कहा जाता है। इस तरह की फोटोग्राफी मे न केवल प्राकृतिक दृश्यों की फोटो ली जाती है बल्कि इसमें मौजूद पशु, पक्षी और अन्य जीव जन्तुओं की अलग अलग और विभिन्न शैलियों मे फोटो ली जाती है। (Anthony, 2022) [1], फोटोग्राफी के इतिहास में 'वाइल्डलाइफ फोटोग्राफी' नामक पन्ना ऐसा भी नहीं है कि बहुत बाद में आकर जुड़ा हो। जॉर्ज ईस्टमैन ने 1888 ई. में पहला फिल्म कैमरा 'Kodak' अमेरिका के बाजार में उतारा था और इसके 18 साल बाद ही 1906 में पहली बार George Shiras III ने कैमरे का उपयोग अमेरिका के मिशिगन झील के आस–पास के जंगल के हिरणों की फोटोग्राफी के लिए किया गया। George Shiras III को वाइल्डलाइफ फोटोग्राफी का जनक (Father of Wildlife Photography) कहा जाता है। George Shiras पेशे से वकील थे और अमेरिकी संसद में पेंसिल्वेनिया के सांसद भी रहे। उन्होंने उस जमाने में, जबकि फोटोग्राफी की दुनिया में कैमरा और लेंस तकनीक अपने पैरों पर ठीक से खड़ी भी नहीं हुई थी, वायर के जरिए कैमरा ट्रैप और फ्लैश की मदद से रात के अंधेरे में वन्य जीवों की तस्वीरें लीं। उनकी ये तस्वीरें दुनिया की पहली वाइल्डलाइफ तस्वीरें हैं। वन्यजीव जानवरों, पक्षियों और कीड़ों तक ही सीमित नहीं है। जंगल में लिए गए समुद्री विषय और वानस्पतिक विषय (कवक और शैवाल सहित) उपयुक्त वन्यजीव विषय हैं,। वन्यजीव छवियों को प्रदर्शनियों के प्रकृति अनुभागों में दर्ज किया जा सकता है। (Podduwage, 2018) वन्यजीव फोटोग्राफी का इतिहास 100 वर्षों से भी अधिक पुराना है। इन वर्षों में इसके लक्ष्य और स्वरूप में धीरे–धीरे बदलाव आया। इसकी जड़ें जानवरों के शिकार से शुरू हुईं और आज पशु संरक्षण के एक प्रमुख उपकरण के रूप में आगे बढ़ती हैं। साथ ही आधुनिक दुनिया में यह अधिक जटिल और उन्नत होता जा रहा है। इसलिए वर्तमान स्थिति और स्वरूप को समझने के लिए एक सटीक परिभाषा अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। वर्ष 2014 तक वन्यजीव फोटोग्राफी के संबंध में कोई पूर्ण प्रभावी परिभाषा स्थापित नहीं की गई थी। लेकिन 1 जून 2014 में, दुनिया के तीन सबसे बड़े अंतर्राष्ट्रीय फोटोग्राफी संगठन प्रकृति और वन्यजीव फोटोग्राफी के लिए एक सामान्य परिभाषा पर सहमत हुए हैं। फोटोग्राफिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका (चै।) जो 470 कैमरा क्लबों का प्रतिनिधित्व करती है, फेडरेशन इंटरनेशनेल डे ल'आर्ट फोटोग्राफिक (FIAP) जो 85 से अधिक राष्ट्रीय संघों का प्रतिनिधित्व करती है और रॉयल फोटोग्राफिक सोसायटी (त्चै) जिसमें 11000 से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सदस्य हैं, ने इसका उपयोग करने का निर्णय लिया। उनकी संबंधित प्रतियोगिताओं और प्रदर्शनियों के लिए प्रकृति और वन्यजीव श्रेणियों की परिभाषा। यह नई परिभाषा 1 जनवरी 2015 (आरपीएस 2014) से लागू हुई। प्रकृति फोटोग्राफी में मानवविज्ञान (मानवता और आधुनिक मनुष्यों का अध्ययन) और पुरातत्व (पिछले मानव जीवन और संस्कृति का अध्ययन) को छोड़कर, प्राकृतिक इतिहास की सभी शाखाओं को चित्रित करना है। प्राकृतिक इतिहास एक विशाल क्षेत्र है जिसमें वनस्पति विज्ञान, प्राणीशास्त्र, भूविज्ञान और पारिस्थितिकी जैसे कई विषय शामिल हैं। शब्दकोश में इसे जंगली अवस्था में जानवरों और पौधों के अध्ययन या सभी प्राकृतिक घटनाओं के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया गया है।

Figure 5: फोटो साभार:- गूगल इमेज

उपसंहार

इस शोध आलेख में फोटोग्राफी की विभिन्न शैलियों पर विस्तार से हुई चर्चा से यह स्पष्ट है कि सभी फोटोग्राफीक शैली का मूल उद्देश्य संचार करना ही है। यह जरूरी नही है कि वह एक ही चीज को संप्रेषित करें, लकिन उनका काम संप्रेषण करना है और यह संप्रेषण का दायरा ही है जो अलग–अलग तस्वीरें अपने साथ लाती हैं, जिसने फोटोग्राफी को बहुत ही सौंदर्यात्मक अर्थ में मानव जीवन की बेहतर समझ के लिए एक आवश्यक उपकरण बना दिया है। फोटोग्राफ का प्रयोग आज के समय में संचार के लिए किसी भी माध्यम जैसे सोशल मीडिया, अखबार, पत्र–पत्रिकायें आदि में तेजी के साथ हो रहा है जो विश्वसनीयता को बनाये रखता है। एक अच्छा फोटोग्राफ, वह फोटोजर्नलिज्म से संबन्धित हो, युद्व फोटोग्राफी से संबन्धित हो, फैशन फोटोग्राफी से संबन्धित हो, विज्ञापन फोटोग्राफी से संबन्धित हो और वह वन्यजीव फोटोग्राफी से ही क्यों न संबन्धित वह फोटोग्राफ भावना, वेदना, सत्यता और कहानी का मिश्रण प्रस्तुत करता है। फोटोग्राफी अपनी तात्कालिकता, तेजी से फैलने की क्षमता, यथार्थवाद को चित्रित करने की क्षमता, अपनी सार्वभौमिकता और अपने प्रचलित अभ्यास में विशिष्ट है। कैमरा एक उपकरण है जो लोगों को उनके जीवन में जो उल्लेखनीय लगता है उसे दृश्य रूप से संप्रेषित करने में मदद करता है। मानव मस्तिष्क को अपने आसपास की दुनिया की जांच करने के लिए जिज्ञासा की आवश्यकता होती है। हम सभी को जिज्ञासा का उपहार और रचनात्मक प्रतिभा का आवंटन दिया गया है। कल्पना को तलाशने, व्यक्त करने और याद करने के लिए एक मंच की आवश्यकता होती है और वह मंच कैमरा और फोटोग्राफी के रूप में बनकर उभरा है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. Anthony J. (2022, OCT. 24). *ART IN CONTEXT*. Retrieved from https://artincontext.org: https://artincontext.org/types-of-photography/
2. *ART IN CONTEXT*. (2022, OCT. 26). Retrieved from https://artincontext.org/: https://artincontext.org/types-of-photography/
3. Ballenger, H. B. (2014). Photography: A Communication Tool. *Art and Design Theses by an authorized administrator of ScholarWorks @ Georgia State University*, 21.
4. Dijck, J. V. (2008). Digital Photography: Communication, Identity, Memory. *Forthcoming in: Visual Communication, 7*, 57-76. Retrieved from https://www.researchgate.net/publication/228637685_Digital_Photography_Communication_Identity_Memory
5. Dr. Doha El-Demedash, D. R. (2017). The Role of Fashion Photography in Fashion Design Field. *Architecture, Arts Magazine*, 1-23. doi:10.12816/0040837
6. Ghosh, D. (n.d.). Photography and Communication: A Study of Interrelationship. *International Journal of English Learning and Teaching Skills*, 228-238. Retrieved from https://www.ijeltsjournal.org/wp-content/uploads/2020/01/36.Photography-And-Communication.pdf
7. Gleason, T. (2008). The communicative roles of street and social landscape photography. Simile, 8(4), 1-13.
8. Harrison, Barbara (2002) 'Photographic Visions and Narrative Inquiry.' *Narrative Inquiry* 12 (1): 87-111.
9. Khanfar, Y. (2013). The language of light. (cover story). World Literature Today, 87(2), 28.
10. Onobe, M. (2023). PHOTOGRAPHY FOR ADVERTISING AND PUBLIC RELATIONS. *Media Systems of Communication*, 215-244. Retrieved from https://www.researchgate.net/publication/370497245_PHOTOGRAPHY_FOR_ADVERTISING_AND_PUBLIC_RELATIONS
11. Podduwage, D. R. (2018). Understanding differences between nature photography and wildlife photography genres through an overview of its standardized definitions. *research gate*. Retrieved from https://www.researchgate.net/publication/334122414_Understanding_differences_between_nature_photography_and_wildlife_photography_genres_through_an_overview_of_its_standardized_definitions
12. Streitberger, A., & van Gelder, H. (2010). Photo-filmic images in contemporary visual culture. Philosophy of Photography, 1(1), 48-53.
13. Trachtenberg, A. (Ed.). (1980). Classic essays on photography. New Haven: Leete's Island Books, Inc
14. Internet
15. वालेस, ए. (2019, October 24). सीएनएन. Retrieved from https://edition.cnn.com/: https://edition.cnn.com/style/article/eye-of-sun-national-gallery-photos/index.html
16. https://www.lafhajstudios.com/haythem-lafhaj-blog/importance-of-communication-in-photography
17. https://www.jainuniversity.ac.in/blogs/photojournalism-communicating-through-visuals#
18. http://vgmcu.blogspot.com/2016/05/blog-post.html
19. https://digitalthinkr.com/what-is-photo-journalism/
20. https://www.hmoob.in/wiki/War_photography
21. https://www.krutidevunicodeconverter.com/unicode-to-krutidev-converter.php
22. https://sahostyle.com/wp-content/uploads/2020/11/%E2%80%8E%E2%81%A8Fashion-Photography.pdf
23. https://www.finearts.cmu.ac.th/e_learn/fashion_photography.pdf
24. https://www.photographyhindi.com/wildlife-photography-in-hindi/
25. https://careerbanaye.com/photography-wildlife